संडे जागरण

d

भोपाल, 18 अक्टूबर 2020

www.jagranmp.com/epaper

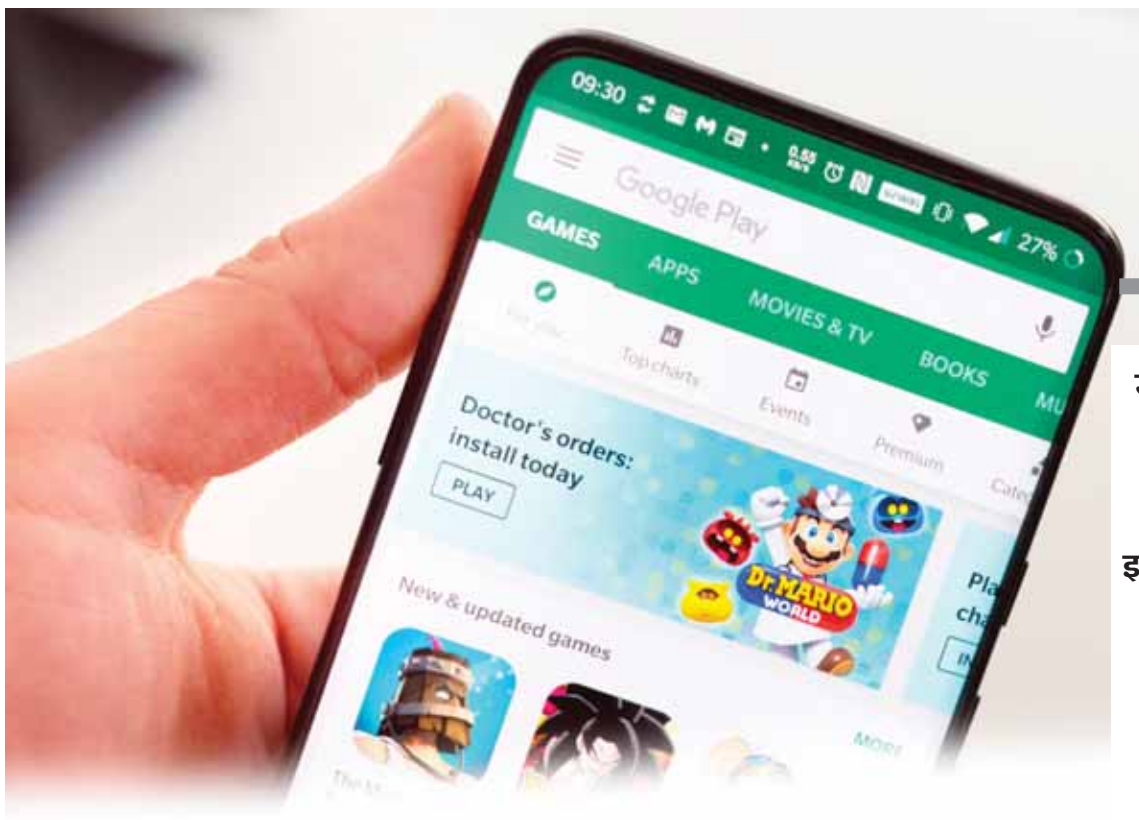

दरकने लगी

गूगल और ऐपल स्टोर्स की मंडियां

मोबाइल फोन की दुनिया में गूगल प्ले स्टोर और ऐपल ऐप स्टोर नाम की दो सबसे बड़ी मंडियां हैं। इन दोनों मंडियों में दुनिया भर में बनने वाले तरह-तरह के ऐप्स फ्री में भी मिलते हैं और बिकते भी हैं। जैसे फेसबुक या आरोग्य सेतु ऐप फ्री हैं, लेकिन गेमिंग से लेकर कला और विडियो एडिटिंग की दुनिया में हजारों ऐप्स ऐसे हैं, जो लोग पैसे देकर खरीदते हैं। पिछले साल दुनिया में लोगों ने 338 खरब रुपए के ऐप्स खरीदे हैं। 2021 में इस मार्केट में 507 खरब रुपए के ऐप्स बिकने का अनुमान है और 2023 तक इसके 685 खरब रुपए तक पहुंचने की उम्मीद है।

राहुल पाण्डेय

पिछले महीने गूगल ने अपने प्ले स्टोर से पेटीएम को यह कहते हुए हटा दिया कि वह उसकी नीतियों का उल्लंघन कर रहा है। इससे पहले गूगल ने फूड डिलिवरी ऐप जोमाटो और स्विगी को भी ऐसे ही नोटिस भेजे। वहीं ऐपल तो इस साल चार हजार से अधिक ऐप्स को अपने स्टोर से तरह-तरह के बहाने बनाकर हटा चुका है। भारत सहित दुनिया भर में स्टार्टअप शुरू करने वाले ऐप्स मार्केट में गूगल और ऐपल के एकाधिकार से परेशान हो चुके हैं।

मोबाइल फोन की दुनिया में गूगल प्ले स्टोर और ऐपल ऐप स्टोर नाम की दो सबसे बड़ी मंडियां हैं। इन दोनों मंडियों में दुनिया भर में बनने वाले तरह-तरह के ऐप्स फ्री में भी मिलते हैं और बिकते भी हैं। जैसे फेसबुक या आरोग्य सेतु ऐप फ्री हैं, लेकिन गेमिंग से लेकर कला और विडियो एडिटिंग की दुनिया में हजारों ऐप्स ऐसे हैं, जो लोग पैसे देकर खरीदते हैं। पिछले साल दुनिया में लोगों ने 338 खरब रुपए (461.17 बिलियन डॉलर) के ऐप्स खरीदे हैं। 2021 में इस मार्केट में 507 खरब रुपए (693 बिलियन डॉलर) के ऐप्स बिकने का अनुमान है और 2023 तक इसके 685 खरब रुपए (935 बिलियन डॉलर) तक पहुंचने की उ मीद है।

गूगल और ऐपल पर इस मार्केट में अपना एकाधिकार कायम करने के आरोप लग रहे हैं। इनकी कमाई का अंदाजा लगाने वाली संस्था सेंसर टावर की रिपोर्ट है कि इस साल की तीसरी तिमाही तक अकेले ऐपल अपने स्टोर से 19 बिलियन डॉलर कमा चुका है तो गूगल ने अपने प्ले स्टोर से 10.13 बिलियन डॉलर कमाए हैं। यहां मजे की बात यह है कि अधिकतर लोगों के पास एंड्रॉयड फोन होते हैं, तो ऐपल के मुकाबले एंड्रॉयड ऐप्स तीन गुना ज्यादा डाउनलोड होते हैं, मगर कमाई ऐपल की ज्यादा होती है। अपनी रिपोर्ट में सेंसर टावर ने बताया है कि यह कमाई गूगल के प्ले स्टोर और ऐपल के ऐप स्टोर से 36.15 बिलियन ऐप्स बिकने से हुई है। पिछले साल के मुकाबले इस साल सामान्य से

23.13 फीसदी अधिक लोगों ने ऐप्स डाउनलोड किए हैं।

भारत की बात करें तो यहां तकरीबन 50 करोड़ लोग स्मार्टफोन इस्तेमाल करते हैं। इनमें से महज

गूगल और ऐपल पर इस मार्केट में अपना एकाधिकार कायम करने के आरोप लग रहे हैं। इनकी कमाई का अंदाजा लगाने वाली संस्था सेंसर टावर की रिपोर्ट है कि इस साल की तीसरी तिमाही तक अकेले ऐपल अपने स्टोर से 19 बिलियन डॉलर कमा चुका है तो गूगल ने अपने प्ले स्टोर से 10.13 बिलियन डॉलर कमाए हैं।

3 फीसद के पास ऐपल के फोन हैं, बाकी तकरीबन 97 फीसदी लोगों के पास अपने एंड्रॉयड फोन है। इनसे होने वाली बेहिसाब कमाई की दौड़ में गूगल

आगे निकलना चाहता है। पिछले महीने गूगल ने इन ऐप बनाने वालों के लिए नया नियम बना दिया कि अगर उसके प्ले स्टोर से कोई ऐप बिकता है तो ऐप बनाने वाला प्रति ऐप तीस प्रतिशत कमीशन पहले तो गूगल की जेब में डालेगा। अब अगर मंडी में बैठकर माल बेचने वाला डिवेलपर तीस पर्सेंट कमीशन गूगल को ही दे देगा, तो वह भी पूछ रहा है कि उसके पास क्या बचेगा? मगर मोबाइल की ऐप्स मंडी पर एकछत्र राज करने वाली कंपनियां रोज ही डिवेलपर्स पर नए-नए नियम लादती जा रही हैं। लेकिन अब इनकी मोनोपोली दरकती दिखाई दे रही है। वजह साफ है। मोबाइल बनाने वाली कंपनियां तो अपने मोबाइल के साथ अपना ही ऐप स्टोर बहुत पहले से दे रही थीं, मगर अब और भी कई खिलाड़ी इस फील्ड में हाथ आजमाने आगे आ रहे हैं। पेटीएम ने तो गूगल से हुए विवाद के बाद से ही अपना मिनी प्ले स्टोर शुरू कर दिया है। इसके अलावा भारत सरकार का भी एक ऐप स्टोर माय गॉव डॉट इन पर पहले से ही चल रहा है, जिसमें लगभग 1200 ऐप्स पहले से ही मौजूद हैं। इसी महीने की शुरुआत में खबर आई कि भारत सरकार अपना खुद का ऐप स्टोर लॉन्च करने जा रही है, ताकि स्टार्टअप्स को ऐपल और गूगल जैसी कंपनियों के चंगुल से बचाया जा सके। बता रहे हैं कि सरकार यह भी सुनिश्चित करने की कोशिश में है कि मोबाइल बनाने वाली कंपनियां सरकारी ऐप स्टोर को मोबाइल में उसी तरह से इंस्टाल करके दें, जैसे कि वह गूगल या ऐपल के ऐप स्टोर्स देती हैं।

एक खोज, कई विवाद और नोबेल

हरजिंदर

इस साल रसायन शास्त्र के लिए दिया जाने वाला नोबेल पुरस्कार कई तरह से हैरत में डालने वाला है। एक तो रसायन विज्ञान को लेकर परंपरागत सोच रखने वालों को इससे आश्चर्य हुआ होगा। उन्हें यह लग सकता है कि मामला जीवों की कोशिकाओं के डीएनए से जुड़ा है और पुरस्कार रसायन शास्त्र का दिया जा रहा है। हालांकि, आज का विज्ञान इस सोच से बहुत आगे निकल चुका है और जिसे हम जैव रसायन शास्त्र कहते हैं, वह एक ऐसा मोर्चा है, जहां बायो-केमिस्ट्री ही नहीं, बायो इंजीनियरिंग और बायो टेक्नोलॉजी भी एक साथ खड़े दिखाई देते हैं। इस मसले को छोड़ दें, तब भी इमैनुएल शार्पोंतिए और जेनिफर ए डाउडना को जीनोम एडिटिंग का तरीका विकसित करने के लिए इस साल का जो नोबेल पुरस्कार घोषित किया गया है, वह कई तरह से नोबेल समिति की बदलती सोच को दर्शाता है।

नोबेल पुरस्कार में आमतौर पर परंपरा यह रही है कि किसी भी खोज या साहित्यिक कृति के बाजार में आने के दशकों बाद उसका चयन इस पुरस्कार के लिए होता है। इसके पीछे सोच यह रही है कि किसी भी कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार तब दिया जाए, जब उससे जुड़े तमाम विवाद खत्म हो चुके हों। और किसी चीज के लिए किसे पुरस्कार दिया जाना है, इसको लेकर पूरी स्पष्टता बन चुकी हो, ताकि पुरस्कार पर कोई विवाद न खड़ा हो। यही वजह है कि अक्सर जब पुरस्कार लेने वैज्ञानिक मंच पर पहुंचते हैं, तब तक वे अपने सक्रिय जीवन का एक बड़ा हिस्सा पार कर चुके होते हैं। इसलिए नोबेल पुरस्कार अक्सर लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार जैसा भी लगता है। हालांकि, विश्व-शांति के लिए दिया जाना वाला नोबेल इसका अपवाद रहा है। इसे लेकर हर दूसरे साल विवाद सामने आते रहे हैं।

इस लिहाज से देखें, तो शार्पोंतिए और डाउडना की गिनती युवा वैज्ञानिकों में की जा सकती है। वैज्ञानिक के तौर पर इन दोनों का सक्रिय जीवन अभी बहुत लंबा रहने वाला है। और उनकी खोज भी कोई बहुत पुरानी नहीं है। महज आठ साल पहले ही इस जोड़ी ने उस क्रिस्पर तकनीक पर एक शोधपत्र लिखा था, जिसने दुनिया को जीनोम एडिटिंग का एक नया तरीका दिया। हालांकि, अभी इस बात पर विवाद है कि क्रिस्पर तकनीक विकसित करने का सेहरा इन दोनों के अलावा और किस-किस के सिर पर बंधना चाहिए, क्योंकि कई और दावेदार भी हैं। इसीलिए जब नोबेल पुरस्कार की घोषणा हुई, तो सारे दावेदारों के नाम एक बार फिर चर्चा में आ गए।

लेकिन नोबेल कमेटी ने जिस तरह से एक ऐसी खोज को पुरस्कार के योग्य समझा, जो इस समय चर्चा में भी है और विवादों में भी, वह स्वागतयोग्य जरूर है। एक तो इसलिए भी कि विज्ञान के लिए पुरस्कार जीवन की संध्या-वेला में ही दिए जाएं, इस परंपरा को तोड़ना जरूरी था। वैसे इस बार भौतिक विज्ञान के लिए जिन तीन वैज्ञानिकों को नोबेल पुरस्कार दिया गया है, उनमें से एक रोजर पेनरोज कुछ ही महीनों में 90 साल के हो जाएंगे, जबकि इस त्रयी में शामिल एक वैज्ञानिक की उम्र अभी महज 55 साल है।

लेकिन क्रिस्पर तकनीक के लिए नोबेल दिए जाने का फैसला एक अन्य कारण से महत्वपूर्ण है। जीन और डीएनए में बदलाव करने की तकनीक पहले भी थी, लेकिन शार्पोंतिए और डाउडना ने जो तकनीक विकसित की, उसने जीवों की प्रकृति में बदलाव करना काफी आसान बना दिया है। बीजों व जैव उत्पादों के कारोबार में लगी कई कंपनियों ने इस तकनीक को हाथों-हाथ लिया और पिछले कुछ समय में ऐसी कई किस्मों को बाजार में उतारा है, जिनमें अधिक उपज से लेकर कीटों और संक्रमण से बचाव के लंबे-चौड़े दावे जुड़े हैं। दूसरी तरफ, इसने जैव तकनीक का सिरे से विरोध करने वालों को एक नया गुस्सा दिया है और तमाम बेसिर-पैर के तर्कों के बावजूद यह आंदोलन बढ़ता हुआ ही दिख रहा है। और जब तलवारें दोनों ही तरफ खिंची हुई हैं, तब इसमें एक तीसरा पक्ष भी है। और वह है, नीति-शास्त्रियों का।

नोबेल पुरस्कार में आमतौर पर परंपरा यह रही है कि किसी भी खोज या साहित्यिक कृति के बाजार में आने के दशकों बाद उसका चयन इस पुरस्कार के लिए होता है। इसके पीछे सोच यह रही है कि किसी भी कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार तब दिया जाए, जब उससे जुड़े तमाम विवाद खत्म हो चुके हों। और किसी चीज के लिए किसे पुरस्कार दिया जाना है, इसको लेकर पूरी स्पष्टता बन चुकी हो, ताकि पुरस्कार पर कोई विवाद न खड़ा हो।

चंदा मामा ही क्यों

चाचा क्यों नहीं!

मंथन के बाद जब चंद्रमा प्रकट हुआ तो उसकी आभा अनेक सूर्य के सदृश थी। मत्स्यपुराण में चंद्रमा की उत्पति का वर्णन है। उसके हिसाब से लक्ष्मी एवं चंद्रमा दोनों सहोदर हुए। हर स्त्री गृह लक्ष्मी का स्वरूप है, तब मां भी उस घर की लक्ष्मी हुईं और मां के भाई को 'मामा' ही कहा जाएगा। चंद्रमा के बारे में सब जानते हैं कि दक्ष (सती के पिता) ने उन्हें क्षय होने का शाप दिया था क्योंकि चंद्रमा की प्रीति रोहिणी से अधिक थी। दक्ष ने अपनी सत्ताइस कन्याओं का विवाह चंद्रमा के साथ किया था, मगर चंद्रमा सबसे अधिक रोहिणी पर अनुरक्त थे। क्रोधवश दक्ष ने चंद्रमा को क्षय होने का शाप दिया।

चांद मामा ही क्यों, चाचा या ताऊ क्यों नहीं? भैया भी हो सकता है। भारत में खासकर उत्तर भारत में शायद ही कोई बच्चा होगा, जिसकी मां ने उसे झूले या गोद में सुलाते हुए, यह लोरी नहीं गाई होगी। बचपन से हमने सुना है, चांद हमारा मामा है। थोड़ा बड़े हुए तो चंदा मामा के नाम से कहानियों की किताब पढ़ने लगे और फिर विद्यालय ने चांद से जुड़े सारे स्वप्न ध्वस्त कर दिए। चंद्रमा पृथ्वी का उपग्रह है। सूरज की रोशनी से प्रकाशित होता है। धरती के सबसे नजदीक चंद्रमा अवस्थित है। चांद सौंदर्य के लिए धड़ल्ले से उपयोग किया जाने वाला उपमा है, तो शरद पूर्णिमा को श्रीकृष्ण ने रास रचाया था। हर पूर्णिमा से चांद क्षीण होता जाता है और अमावस्या को वह विलीन हो जाता है। टोने-टोटके में विश्वास करने वाले जनों के लिए अमावस्या सिद्ध मुहूर्त है।

जिज्ञासा तो यह जानने की है कि क्यों बदलता रहता है इतना अधिक चंद्रमा का मूड या मन? खास बात यह है कि चंद्रमा मन का स्वामी है और हमारे मन को भी अच्छा खासा प्रभावित करता है। चंद्रमा का हमारी कल्पनाओं पर कब्जा है। ना सिर्फ चंद्रमा रूप की पराकाष्ठा का द्योतक है, मगर किसी

खूबसूरत चेहरे पर दाग हो तो वहां भी चंद्रमा काम आ जाता है क्योंकि उसमें भी दाग है। सुख सौभाग्य पाने के लिए महिलाएं कार्तिक माह की चतुर्थी को चांद के दर्शन कर ही व्रत खोलती है। मतलब बचपन से चंद्रमा हमारी सोच, कल्पनाओं. धर्म-संस्कार पर मजबूत कब्जा जमाए है।

'मा' प्रत्यय से युक्त चंद्र दरअसल पुराण के अनुसार श्रीलक्ष्मी का सहोदर है। अमृत मंथन की कहानी हमने सुनी है। जब समुद्र का मंथन में अमृत निकाला गया था। मगर, इतना सहज नहीं था समुद्र का मंथन करना। वासुकि नाग की रस्सी और मंदार पर्वत से मथानी बनाकर समुद्र को मथा गया। लक्ष्मी प्रकट हुई पर अमृत नहीं निकला।

फिर, मंथन को जारी रखा गया और चंद्रमा प्रकट हुआ। उसकी आभा अनेक सूर्य के सदृश थी। मत्स्यपुराण में चंद्रमा की उत्पति का वर्णन है। उसके हिसाब से लक्ष्मी एवं चंद्रमा दोनों सहोदर हुए। हर स्त्री गृह लक्ष्मी का स्वरूप है, तब मां भी उस घर की लक्ष्मी हुईं और मां के भाई को 'मामा' ही कहा जाएगा। चंद्रमा के बारे में सब जानते हैं कि दक्ष (सती के पिता) ने उन्हें क्षय होने का शाप दिया था क्योंकि चंद्रमा की प्रीति रोहिणी से अधिक थी। दक्ष ने अपनी सत्ताइस कन्याओं का विवाह चंद्रमा के साथ किया था, मगर चंद्रमा सबसे अधिक रोहिणी पर अनुरक्त थे। क्रोधवश दक्ष ने चंद्रमा को क्षय होने का शाप दिया।

चंद्रमा चिंतित हो गए एवं अमृत के साक्षात् स्रोत शिव की अर्चना करने लगे। शिव के तप में चंद्रमा जिस स्थान पर तल्लीन हुए उसे प्रभास पाटन कहा गया है, जहां आज सोमनाथ का मंदिर स्थापित है। शिव ने चंद्रमा के तपस्या से प्रसन्न होकर उन्हें अपने शीश पर धारण किया जिसके प्रभाववश क्षय को प्राप्त चंद्रमा भी खिलना शुरू कर देता है।

चंद्रमा दरअसल अवनति एवं उन्नति, निराशा एवं आशा, अंधकार और उजाला के दो सेतुओं को अमावस्या एवं पूर्णिमा के माध्यम से जोड़ता है। इसलिए बचपन में चंद्रमा की कहानी सुनाई जाती है क्योंकि जीवन पथ पर हर हाल में हमें चलना है। शायद कारण प्रेरित करना हो, या फिर अमृत तत्व की तलाश हो।

मत्स्य पुराण में चंद्रमा को अमृत का स्रोत माना गया है। कहा गया है कि चंद्रमा का रथ तीन पहियों वाला है जिसके दायीं एवं बायीं ओर कुन्द कुसुम के समान श्वेत वर्ण के दस घोड़े जुते हुए हैं। चंद्रमा उस रथ पर घूमते हैं और चंद्रमा के अमृत का पान देवतागण कर उसे क्षीण देते हैं। इन देवताओं की संख्या तैंतीस हजार, तीन सौ तैंतीस (33,333) बताई गई है। जब सिर्फ दो कला अमृत बच जाता है तब चंद्रमा सूर्य की अमा नामक किरणों में जाकर बस जाता है। वह तिथि अमावस्या कही जाती है जिससे कि पुनः उसका पोषण हो सके।

इस पुराण को तार्किक दृष्टिकोण से देखा जाए तो वह पुरानी कहानियों का संग्रह है, परन्तु इसके बाद भी ये कहानियां गल्प नहीं हैं। वेद में कहा गया है कि चंद्रमा सूर्य की किरणों से प्रकाशित होता है। अर्थात् मत्स्य पुराण की कथा को वैज्ञानिक आधार मिल जाता है। चंद्रमा की प्रकृति के विषय में एक तरफ गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि नक्षत्रों में वे चंद्रमा हैं, तो श्रीमद् भागवत में व्यास लिखते हैं- विराट भगवान के मन से सोलह कलाओं वाला चंद्र उत्पन्न हुआ है। चंद्रमा मनोमय, अन्नमय, अमृतमय परम पुरुष का रूप फिर सुख सौभाग्य चाहने वाले कहां जाएं?